

पता हि तैश्विनी

लन्थात्

कैथी लन्थों में

विद्यीयानी लिखने की नीति सिखाने वाली पुस्तक

जिसे

8806

शरीर विद्यावान् बुद्धिमान् शरीरों से सीने से मिले लड़
साख वहाहु २५५ लन्थों के मद्यों के इन्मये कलके

हु काम से

लाल लन्थन के मद्यों के डिप्टी इन्मये कल

मुंशी लन्थिका पुस्तक साहबने

देवनागरी से कैथी में लिखा

पहिली बार

लन्थन का

दुर्गा लाल किशोर के छाये पाने में छपी॥

लन्थन का १८९६

पत्राहितैश्विनी

लन्थात

कैथी लन्थों में

विद्येयानी लिखने की नीति सिखाने वाली पुस्तक

जिसे

8806

अर्द्धविद्येयान् बुद्धिमान् अनी जे सी ने सफ़िलड
साख वहाहु २५५ लन्थों के मद्यों के इन्सपेकटों के

हुकम से

गिला लन्थन के मद्यों के डिप्टी इन्सपेकट

मुंशी लन्थिका प्रसाद साहब ने

देवनागरी से कैथी में लिखा

पहिली बार

लन्थन के

दुसरी बार लिखने के छापे पाने में छपी॥

लन्थन के मद्यों के

C. No. 8806 Page 11/11

1067

भूमिका

श्री गणेशाय नमः

जानना चाहिये कि जब तक कैथी पढ़ने वाले सिविल पाटी पर लोना सासी लोना पहाड़ा सवांगी ब्रह्मः सीप्या करते हैं लोना बहुत दुल्हा तो मुहूर्तवानी जानकी की पाटी वह भी गलत वे समझे वृद्ध पढ़लिया मानों सब कुछ पढ़लिया शुद्ध लिखना तो वह जानते ही नहीं छोटे बड़े लका १ दुका १ लो १ उका १ ब्रह्मः में कुछ फलक नहीं करते दाना को (दन) पानी को (पनी) ब्रह्मः लिखते हैं इसी सबब से ऐसा बहुत देखने में लाया है कि कैथी चिटठियों को बहुत लाद भी बहुत का लंदाण से थोड़ा बहुत पढ़ सकते हैं ऐसी लशुद्ध लिखावट के मिटाने के वासते बड़े विद्वान् लोना बुद्धिमान शरीर जो सी. नेम फिलड साहब वहा दु १ एम. ए. जो पहिले लवय के मदन सो के डाइने कदने

C. No. 8806 Price R. 1/-
34433 भूमिका 1067
8-10-13 श्री गणेशाय नमः

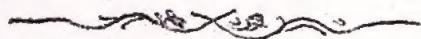
जानना चाहिये कि लवणक कैथी पढ़ने
वाले सिनिक्र पारी पन लोना मासी लोना पहाड़ा
सवाणि ब्रंशोनः सीप्या करते हैं लोना बहुत दुल्हा
तो मुहणवानी चानकी की पारी वह भी
शालत वे समझे वृहे पढ़लिगा मानों सब कुछ
पढ़लिगा शुद्ध लिप्यना तो वह जानते ही
नहीं छोटे बड़े लका 1 दका 1 लोना उका 1
ब्रंशोनः में कुछ फलक नहीं करते दाना को
(दन) पानी को (पनी) ब्रंशोनः लिप्यते हैं
इसी सबब से ऐसा बहुत देखने में लगता है
कि कैथी चिटठियों को बहुत ल्हादमी बढु
का ल्हादण से थोड़ा बहुत पढ़ सकते हैं
ऐसी ल्हादुष्ट लिप्या बढ के मिटाने के वासते
बड़े विद्वान् लोना बुद्धिमान शरीर
जो सी. नेम फिलड साहब वहा दु एम. ए.
जो पहिले ल्हादव के मदन सो के डाइने कदने

ल्लो१ ल्लव वही के इनसयेकदने ल्लपने
डाइनेकदनी के प्रका में वड़ी मेहनत ल्लो१
ल्लचछे२ लोगों की सलाह से कैथी बन
माला दो हिस्सों में ऐसी नीति से तैयार कराई
कि उसके पढ़ने से कैथी बहुत सही२ लिखी
जा सकती है संस्कृति ल्ल१वी फ़ारसी
संगीत के दो तीन ल्लछ१ एक में मिले हुए
ऐसे शब्द उसकी नीति बन सही२ लिखे
जा सकते हैं ल्लो१ ल्लव लफ़ज़ सही लिखे
जा सकते हैं तो वह सही पढ़े भी जा सकते हैं
जो लोग शोचें तो यह किताबी बड़ी बात
साहब वहादुर की मेहनतानी से हो गई हम
ल्लोगों की इस बात के वासते साहब वहादुर
का जी से इस्मान मंद होना चाहिये कैथी
ल्लछ१ों में ल्लव तक कोई ऐसी किताब
नहीं देखने में लाई कि जिस से उन ल्लछ१ों
के पढ़नेवालों को ल्लचछी तबह से चिढ़ी
पानी लिखना लावे इस वासते उ नहों
साहब वहादुर के डुकुम से यह पुस्तक
(पतनहिगैशिनी) नागरी से कैथी ल्लछ१ों
से मुक्त बन सही२ लिखी गई है इस किताब

के लिखने में यह बड़ा विचार रहा है कि इस
में वही शब्द हों जो गांव वाले बोलते हैं चाहे
यह संस्कृत हिंदी लगनवी प्रगती जिस
बोली के हों जिसमें गांव के लोग मुहूर्तियों
की थोड़ी मरुद से इसका मतलब समझ जायें
जहां तक होसका है तहां तक इस किताब को
लिखावट में इसका भी बहुत विचार रक्खा
गया है कि शब्द चाहे जिस बोली के हों सही
लिखे जायें बोलने में चाहे वे जैसा बोले जानें
हों यह इस बात में लाजानी हो गई कि बहुत
से संस्कृत लगनवी बंगी: लगनियों के
बदले कैथी में कोई लगन नहीं है नोन
जैसा नोन बहुत से लगनियों के बदले
देवनागरी लगनियों को तोड़ फोड़ करनी
तब के लगन बन लिखे गये हैं वेसे ही
उन लगनियों के बदले नये लगन भी
बनाये जायें तो गांव के लोग उन्हें कुछ भी
न समझेंगे नोन जो मतलब है वह पूरा न
होगा जैसे (स) (अ) कि इनको तोड़ने से
(कश) नोन (ज) वा (न) हो सकते हैं
यह मैं जानता हूं कि इनको कोई नहीं समझता

इस वासते (क्ष) की जगह (छ) लो० (अ)
 की जगह (ग) लिखा गया है (ष) के जगह
 पर कहीं (प) लो० कहीं (श) जैसा जिस
 शब्द में बहुत करके बोला जाता है लिखा
 गया है (ड) (ञ) (ण) के जगह पर (न)
 लिखा है इसी तरह (ऋ) (ॠ) (ऌ) (ॡ)
 को (नि) (नी) (लनि) (लनी) लिखा है लो०
 ऐस ही बहुत से ल० वी ल० छत्रों को भी
 जानना चाहिए इस किताब के देखने पढ़ने
 वालों से विनती करता हूँ कि ऐसी रूखायिर्नी
 पर प्याराल करके इस किताब में जो मुद्दे से
 मूल यूँ कड़ई हो उसको मेहनतानी करके
 सुधार दें जिसमें हमने दफ्तल के छपने में
 सही हो जाए—

इति



पत्रहिंतेशिनी

पहला कांड

पत्रलिखनेवाली विद्या का वर्णन

इस विद्या से चिट्ठियों का लिखना पढ़ना
जाना है चिट्ठियाँ (३) तरह की होती हैं एक
छोटों से बड़ों को लौन दूसरे बड़े से छोटों को
लौन तीसरे बराबर वालों को लौन हमेशा:
जब पत्र लिखना हो तब यह विचार लेना
चाहिये कि जिसे पत्र लिखना है वह बड़ा
है या बराबर या छोटा, छुटाई लौन बड़ाई
लौन बराबरी दो प्रकार की होती हैं एक
नातेदारी लौन मिताई में दूसरे जब कि
नातेदारी ब्रौन: नहो परंतु मुलाकात लौन

ज्ञान पहिचान वा संसार का कुछ काम
 उस से हो सो नातोदारी में तो छुटाई बड़ाई
 लीन बनावती उस पर होगी लीन ज्ञान
 पहिचान में उसके इच्छित लीन येन
 लीन गुन पर जैसे कि लिखनेवाला कैसा
 हो बड़े दण्डेवाला वा येनी वा बिहारीवान्
 हो परंतु जब लिखने से बड़े नातोदारी को
 लिखेगा तो ज़रूर बड़ा लीन पुदुष्या करके
 लिखेगा लीन जिस से नातोदारी नहीं है
 उसे जब लिखते हैं तब चाहे वह उसमें
 छोटा हो पर दण्डे वा येन वा बिहारी में
 लिखनेवाले से सिवाय है तो भी उसे बड़ा
 ही करके लिखेंगे लीन चाहे उसमें कैसा
 हो बड़ा है पर दण्डे वंगीन में लिखनेवाले
 से काम है तो बड़ा करके लिखना कुछ
 ज़रूर न होगा—

बिदही लिखने में कई बातों का विचार
 रखना चाहिये पहले यह कि सांगे यात्र में
 कोई बेमतलब बात न हो दूसरे यह कि
 ऐसे सहल २ शब्द हों कि जिनमें सब
 लोग समझें चाहे वह हिंदी संस्कृत

प्रागैतिहासिक में से जिस बोली के हों तीसरे
 यह कि वगन बहुत छोड़े में लोनी की कहें
 कोई बात लपनी हट्ट से बढ़ने न पावे थैथै
 यह कि संस्कृत की श्रुति यह कई पद एक
 में मिलने न पावे पांचवें यह कि वाप मा को
 ऐसी बातें लिख्ये कि लप की वड़ी कनिषा
 होगी पा में इहसानमंद होऊंगा क्योंकि
 ऐसी बातों से एक तरह की झुटाई पाई जाती
 है अरे इस बात का विचार लप्ये कि लप
 से लप तक एक ही तरह की लिखावट हो
 ऐसा न हो कि कहीं छोटा कहीं बड़ा लोनी
 कहीं लपना कहीं बेगाना बनादिवे सातवें
 यह कि सत्कारी कायणा लपणी पनवने
 में किसी तरह की बनावट वा सजावट वा
 कठिन शब्द नहीं केवल साफ़ २ भाग लव
 हो हिंदी में बहुत प्रकार के लपटाव लोनी
 ललकावे लपथाग शिनामा लिखने की
 नीतें नहीं होती जैसे कि उरदू प्रागैतिहासिक में हैं
 हिंदी में जो बड़े को लिखना हो तो सिद्धि
 शरी लोनी छोड़े लोनी बनावन वाले को
 लिखना हो तो सत्सति शरी लिखते हैं

२ पतनपुतन की लोचनसे माता को

सिद्धि शरीर सप्त शुभोपमा योगी
 माता जी को शिवदाता का पतनाम पढ़ें ये-
 लाप की चिट्ठी पढ़ें थी उसे पढ़ कर मैं
 बहुत प्रशङ्का लगी लाप की सगुणी पुताविक
 मैं वहिन के धन गति था जीजा मैंने ने कहा
 था कि माता जी ने वहिन को बुलाया है
 लोचन लाप को बहुत २ तनह से लाशीनुवादि
 दिया है पर उन्होंने ने यह कहा कि लसी के
 जाने में मुझे बड़ी दिक्कत होगी जाड़े के
 दिन लाने दो मैं साहब के साथ होने पर
 जाऊंगा तब ले जाना लामो मैंने ने हि लामो
 की थी कि मेने कपड़े बहुत पुराने रुख हैं दो
 तीन जोड़े मेणदो पतंगु लसी तक कोई
 कपड़ा मेने पास नहीं पढ़ें था मेना बड़ा हान
 है जो दश वातह दिन लोचन देर रुई तो माने
 शर्म के बाहर निकलना बहुत कठिन होगा
 मि० लाशाढ शुक्ल ३ संवत् १८२७
 तथा जून ता० ३ सन् १८७० ई० —

३ पातलिपुत्र के नाम

सिद्धि शिनी ई सप्तवर्षी विनायमानवाच
 नाम पत्साद जीव को मृगवली का पतनाम
 पढ़ें— कल नाम पुन से एक ल्नादसी ल्नागि
 उसके कहने से जाना गी कि वहां दो दिन
 कवगवग पानी वगसा नदी भी बहुत बड़ी
 है ल्नाग ईश्वर की दृष्टि से ल्नाग भी ससा
 होने लगा है ल्नाग ल्नाग तक बहुत वगकुल
 थे कि कभी होगा पतमेश्वर ने ल्नागनी दृष्टि
 की ल्नाग पदों के देने में देन न चाहिये जो
 मगणी हो तो कल जाकर बांट दूं मेरे पास
 छपे हुए पदों वग हैं ल्नाग वही ल्नाग लेने
 वाले हैं जिनहोंने पत साल ली था—
 मि० कातिक वदी ५ संवा १८२७ तथा
 ल्नागद्वग ग० ५ सन १८७० ई०

४ पातलिपुत्र की ल्नाग से नाना को

सिद्धि शिनी ५ सकल शुभोपसागि
 नाना जी को ल्नागद्वल्लर की वंदगी पढ़ें—
 ल्नाग कह गये थे कि दृष्टि दृष्टि की

पुस्तकें ल्हाव दश दिनमें हम भेज देंगे परंतु
 एक महीना होगी ल्हामी तक मुद्दे पोथियां
 न मिलीं पंडित साहब गेण तक्रैदि कहते हैं
 ल्हामी जिन लड़कों के पास किताबें थीं उनमें
 उनहोंने बड़ा दिया मैं ल्हामी तीसरी दफ्तर
 में पड़ा हूं ल्हाय के पास पोथियां बनी हैं ल्हामी
 जिहां मोल लेने में सिव्रापि बुकसान के कुछ
 फादिदा नहीं है ल्हाव सुधि कनके मिजवा
 दीजि देगा नहीं तो दफ्तर में किसी लापिक
 न रहूंगा माताजी की ल्हामी से परनाम पहंचे-
 मि० शतावन शुद्ध ४ संवत् १८२७ तथा
 जोलाई ता० २४ सन् १८७० ई०

पतनहिमेशिनी की ल्हामी से नानी को

सिद्धि शरीर नानी जी को रामयन साह
 का परनाम पहंचे—जिहां में बहुत ल्हाय छी
 गनह ल्हानंद में हूं ल्हामी ल्हाय के शुभ समाचार
 तागनि दिन यादता हूं ल्हाय का पतन पहंचा
 ल्हाय की मनीषा माताविक्र १७ रुपये की
 सक्कारी हुंडी भेजाता हूं वरु भाई नारायण-
 दास के नाम है हुंडी की पीठ पर मनीषा लिख-

क१ साकारी अणानेमें ले जावें वहां से पुनः
 पुनः मिल जावेंगे कुछ अथ न देना होगा
 जो वहां पूछें कि किसने हुंडी भरी है तो भरी
 नाम लेवें लो१ जो पूछें कि किस के नाम है
 तो लपना नाम बता दें तीन महीने पीछे
 दूसरी १०७ पु० की हुंडी भरीगा अर्थात् १०७
 पिपे में चित्त उसी लो१ है - मि० माध
 वदी १० संवत् १८२८ तथा ३ जनवरी सन्
 १८७१ ई०

ईपत१ आचाके नाम

सिद्धि शरी प्र स१ वोपमा दीर्घ आचा
 जीव को साहव दीन का प१ नाम पहूँचै लो१
 जीव से लाप चल नाम पु१ को ग१ है तब से
 लाप का कोई पत१ नहीं लाप पिताजी लो१
 माताजी सब वहुत वीकुल हैं वहुत जलद
 लपने शुभ समाचार से प१ सनन कीजिपे
 लाप कह ग१ थे कि हम वहां पहुँचकर पुनः
 लसवाव लेका१ लाहमी भेजेंगे उसका भी
 कुछ हाल न जान पड़ा लो१ १११ साहव से
 लाप से मेढ़ रुई वा नहीं जो रुई तो वे किस

तनह से ल्नाप से मिले चाहिये कि कोई न कोई
 जान ब्रह्म ल्नाप के गेषागान का जलहिनिकल
 ल्नापे क्योंकि ल्नाव ल्नावमें पही एक हो
 हिंदुसतानी सगकोन हैं ल्नाप उनही लोगो
 के पहां हम लोगोका बड़ा मान है पुसाक वेचने
 वाले लाला रामदास मुद्दे मिले थे ल्नापने
 रुपदे मांगते थे मैं ठीक २ नहीं जानता कि
 उनके कितने रुपदे ल्नाप चाहते हैं नहीं तो मैं
 दे देता जो ल्नाप लिख भेजें उनहें दे दूं

७ पात आनणो की ल्नाप से मामाको

मिदिय शरी प सकल गुन याम मामाणी
 को कनिपाशंकर का पन नाम पहुंचे - ल्नापे
 जो छोटी वहिन के विवाह के मध्य ल्नापने
 लिखा था कि ल्नाला सूर्य मल के पहां गनना
 बनगई है उससे बहुत खुशी हुई ल्नाप माता
 जी ने भी बहुत पसंद किया कि वो बहुत ल्नाप
 पढ़ा लिखा निहनी कमासुत बन है ईश्वर
 उसको चिंतनी व न कपे ल्नापने जो ल्नाला
 साहब की वागि लिखी मुद्दे उनसे बहुत ही
 ल्नाप शय १५५ हुआ कि जे ल्नाप से किस बात

का क्रोलनकान कानोहें क्री हम उनके लड़के
को मोल लेते हैं जो इतने उपरि उन्हें देवें हम
से जो होसकेगा वह लपनी लड़की को देखो
कि मलमंसी की वात नहीं है मलावेइसी
को बहुत नहीं समझते कि उनका धन वस
जायगा विवाह करिहुला मोलवेचहुला
वडे पछतावे की वात है कि लभी दे गोते
पहो से नहीं मिटी - मि० चैतन वधि ७ संवत्
१८२७ तथा २मानच सन १८७० ई०

८ पात वहिनके वेटे की लो० से मोसी को

सिद्धि शरीर हिता कानिनी मोसी को नाम
दिल का पनाम पहुंचे - लाप की चिट्ठी
डाक पन लाई हाल मालूम हुला लापने
जो लिखा कि मेने देखने को लाप का बहुत
बहुतणी चाहता है सो सब वात है मुहे भी
लापके थन छूने की बड़ी इच्छा है क्योंकि
लव पांच वरश बीगते हैं कि जबसे मैं लाप
से दू हूं परंतु क्री कतूं न रेसी कोई तात्तिल
होती है कि उसमें हाजिर होऊ लो० न
छुट्टी मिलती है लवमें ने सीतापुन की

वहली की दृष्टिवासा की है चाहिदे कि मंथन
 हो जावे तब मैं जगू २ ल्नाप के पास होकर
 जाऊंगा माता जी फलपुष्पावाह से ल्नामी नहीं
 लोटी कल चिद्वी ल्नाई श्री उसमें लिखा
 था कि ल्नामी १५ दिन वहां ल्नामी रहना
 होगा उस के पीछे सब लोग वहां से चलेंगे
 चाहिदे कि २० दिन में ल्नाजावे- मि० पौश
 शुदी १४ संवत् १८२७ तथा १५ दिसंबर
 सन् १८७० ई०

दं पाणि छोटे माई की ल्नामी से बड़े माई को

सिद्धि शरी ५ सत्र शुभोपमा गौरी
 माई की म वप्पश को रही म वप्पश का
 सलाम पहुंचे- ल्नागे कलता १ पन में
 गालिव का हाल सुनकर बड़ा दुःख हुआ
 कुछ कह नहीं सका कि कितनी बड़ी देवी
 पड़ी कहां ल्नाप उसके विवाह की गदवी
 में थे कहां ब्रह्म सब को छोड़ कर ल्नाप ही
 चला गया इस दुःख का कहां तक बनन
 करूं कि गोते भी नहीं बनता बड़ी विपत्ति
 की बात है कि ऐसा सुपूत लिखा पढ़ा लड़का

यल वसे लव हमाने शोध काने लो१ नेनेसे
कपी होसकताहै सवूरी के सिवार्थि कोई ध्वानहीं
लव जो ल्पाप सवूरी न कोंगे लो१ सवको ।
दिलासा नंदेगे तो दे सव लो१तों शि१ पीटरक१
म१ जावेंगी लो१ कुछ फरिदः नहोगा ईश्वर
उस बेचारे को बेकुठ त्रासदे लो१ हम लोगोंको
संतोष दे - मि० मा१ ५६ शु६ ५ संवा १८२८
तथा ल्पा१ सा१ स१ १८७१६०

१०५११ वहनोई की लो१ से साली को

सवसति शरी वड़ी साली को नंदनंदन का
पिथा पीगपि पहुंचे वहुतदिनों के पीछे मुमहान
पत१ ल्पा१ ल्पाप के शुभ समाचा१ जानने से
चित्त तहदिल कृत्वा ल्पाप से जब पूछो कि
ल्पाप प्यत कपी नहीं भेजती हैं तो ल्पाप यह
जवाब देती हैं कि कोई लिखने वाला न था
अथवा लो१ ल्पाप ने निकाला है लो१
जो यह बात है तो यह भी किस की थूक है मैंने
तो ल्पाप से कई बार कहा था कि दो किताबें
नागरी की जो ल्पाप मेहनत करके एक दो
महीने में पढ़लेंगी तो ल्पाप ने प्यत पत१ लिखने

में किसी से हाथ न जोड़ने पड़ेंगे पतंगु ल्नाप
 कों मानेंगी देव्यो में ही छोटी वहिनने देव्यो-
 ही देव्यो नागरी का लिप्यना पढ़ना सीखलिगी।
 लव सव धन का हिसाव किताव वही लिप्यती
 है लो न माताजी की लो न से सव को चिट्ठी
 पतंगी लिप्या काती है लो न धन में उस से बड़ा
 काम निकलता है जब ईश्वर की कृपा से बड़ी
 होगी तो लपने लड़के वालों को पहले ही से
 लथछीर वांगें सिखलावेगी लो न जो वात
 कगेगी वह ठीक २ लो न बुद्धिमानी से कगेगी
 लव सी कुछ नहीं गिा है जो ल्नाप मुसौंदहों
 तो ल्नाप को एक ही महीने में मातलव सन को
 ल्नापावे ल्नागे शुभ-मि० ल्नागहन वही ७
 संवत् १८२६ तथा नवंबर सन् १८६६ ई०

११ पातृसेवक की लो न से मन्त्रामी को

सिद्धि शरीर सकल गुण यामगाणा।
 साहव को गम सहारिका पतनाम पंहुये-
 ल्नाप कल मेने धन में प्यथ की लो न से बहुत
 तंगी है लो न इसी में लड़के का विवाह होने
 वाला है लो न ल्नाप के सिवार् को ईहि लो न

पालन करने वाला नहीं है कि उस को तकलीफ
 दू जो विवाह न होता तो इतनी ज़रूरत भी न
 थी परंतु यह दूषण का काम है जो लय थी
 गहर से न करने तो लपके नोकर कहलाते हैं
 मैं ने मैने मथुना परसाह से कई बात कहा कि
 सनका से गुम पनथ मांगो दूषण ज़रूर कनिपा
 करेंगे परंतु उस को बड़ी लाज लगती है क्योंकि
 हमेशा से सनका का नमक प्याते हैं लय छोड़ी
 सी बात के वासते करी लपको सतावे परंतु
 राखाना व किसी गहर की गहवीर न हो सकी
 तो मैं ने उसके पूछे विन यह लपकी लपके
 पास में ही है कि जो ऐसे समर्प में सनका से
 पिछले हिसाब का निपटाव हो जायगा तो बड़ी
 कनिपा होगी लपको शुभ भि० कु० १६० संवत्
 १८२७

१२. पातन गहसीलदान वाकिमी

सनकारी लोहदेधन को

सिद्धि शरीर कनिपा सागर गहसीलदान
 साहब को पनाम के पीछे हि लपका है कि
 मैं ने ब्रह्म लाने के लिये लपका का पना लपका

पंगु में कल किसी तरह से नहीं ला सकता
 क्योंकि साहवडिपुटी कमिशनर वहादुर की
 कचहरी में मेरा मुकदमा हो रहा है जो
 मैं लाय जाकर ठूवकारी करता हूं हां पर सो
 तक जो परमेश्वर चाहेंगे तो ज़रूर हाज़िर
 होऊंगा जो कोई बहुत ही ज़रूरत होगी मेरी
 वानी का कोई कुछ भेज दीजिए उसी प्रकार
 लाप की सज़ा भी मोताविक काम हो जायगा
 वहां के हाज़िर होने में मुझे किसी तरह का
 उज़र न था पर ठूवकारी से लाया हूं जो
 पहिले जो लापने नसपताल के चंदे के वारे
 में लिखा था सो मुझे मंज़ूर है जो लापलिये
 उस पर मैं लपने दसगणना का के भेज दूं
 १७ १० साहजारी तक मुझे बहुत न होगा
 क्योंकि इसमें पुर्न बहुत मारी है ऐसे २
 दश रुपए बहुत से कामों में प्यार खर्च ला
 करते हैं लागे शुभ मि० फ० वदीय संवा
 १८०६ तथा फरवरी सन् १८७० ई०

गीसगी कांड

इसमें वडों की लोन से छोड़ों को पाते हैं
 प्रथम पान पिना की लोन से पुन को

सबसति शरी चिंतणीवि पुन नमदता
 को शिव पुनसाह का लाशीन वाह पहुंचे—
 लागे बहुत दिनों से गुमहाना पान नहीं लागा
 जान नहीं पड़ता कि गुम कर्ता कर्ता हो कुछ
 पढ़ते लिखते हो वा नौकरी कर्ता हो हमने
 वहां गुम को इसलिपि भेजा है कि जल्दी से
 कुछ सिद्धी पढ़के लपने गांव लाकर धरती
 प्रमीदारी वगैरः को देखो पंगु मालूम नहीं
 होता कि गुम कर्ता समझे बैठे हो वहां गुमहं
 पांच वरश हो गये लोन लवतक न जाना
 गा कि गुम ने कृति किया आपनी बात तो यह
 है कि लिखना पड़ता इस बात तो नहीं है कि
 गुम लपने धर का काम लोन लोगों के माथे
 छोड़ कर आपदश रुपये की नौकरी के पीछे
 सब देश की धूनि छानो जा इसी प्येती में हुई
 वगैरः के उपराण ने में कोई गदवीन निकासी

जावे तो कितना बड़ा मुनाफ़ा है देवों-मंत्रों की
 कारीगरों की दुई की बड़ी चाहना है लो १
 जितनी दुई हिंदुस्तान में उनही मिले वह
 कम है जे लोग वसवत पहा के हाकिमों से
 कहा करते हैं कि कोई ऐसी पित्त निकाली
 कि पहा में बहुत दुई मिला के लो २
 मिला ये १ शुद्धि दे संवत् १८२७ तथा ता ० ८
 मा १२ सन् १८७० ई०

२५११ शुभसुख की लो १ से धमाका

सुखसुख शरीर चिंतनीय वामदत्त को चिंत
 दत्त का लो १ १५६ पंद्रहें बहुत दिनों से
 तुम्हारी कोई पत्नी नहीं लाई वसतत
 का हाल कुछ जान नहीं पड़ता ता १ दि १
 चित्त उसी लो १ लगाने होता है मला कभी
 कभी चिट्ठी तो लिखा करो कहीं कि पत्नी
 से लो १ मुलाकात होती है लो १ के से
 ही शोच लो १ काम में हो पणों से ही किसी
 मित्त वा माई वंशु की पत्नी लो १ है तो
 सब शोच दूर हो जाते हैं लो १ मन प्रस
 हो जाता है तुम ने पहले लिखा था कि मैं

मदनसा के पहली दफ़ल की सब किताबें
 पढ़ चुका हूँ लोभ मन में है कि नागमल-
 मकुल में सगरी हो जाऊँ मैरा जो हमारी
 सलाह लो तो तुमहारे पासते फिर बहुत
 लयछा होगा कि तुम लामने के डाकदरी
 के मदनसे में सगरी हो जाओ तीन वनश
 तक बड़ा डाकदरी भीषनी होगी लोभजव
 तक हो १५५ का महीना भी मिलेगा इसके
 सिवाय बड़ा तुमहारी बड़ी साली भी है सब
 ताद का सुधीय तुम को होगा पहली बिकारी
 बहुत लयछा है वेदी को का गेणगाव बड़ी
 दण्डगाव का होता है सगकाव से ललगालव
 मिलती है लोभजिस गेगी को देखनेजालो
 उसमें ललगालीस लेने का दृष्टि पाव है
 सिवाय तीन वनश की मिहना है लोभतुमहें
 बहुत जलद लावेगा-शुभ सि० माघ बदी ५
 संवत् १८२७ तथा जलवती सव १८७० ई०

३५११ वापकी लोभसे वेदी को

सप्तसति शरी अंगीविनी वेदी नाम-
 दुलानी को बड़ी पल्लव का लाशीवाह

पंहुथै बेदी तुमहारी चिट्ठी पंहुथी बड़ी खुशी
 हुई लो१ बहुत खुशी तो इससे हुई कि वह
 तुमहारी लिखी हुई थी तुम लपनी लसमा
 से पहां के शुभ समाचार कह देना मैं कह
 ला१ था कि कानहपुर से लपनी पंहुथ
 भेजूंगा पर वहां रहने का मेरा संयोग नहीं
 पड़ा इस सब वसे चिट्ठी न भेज सका लप
 पहां शरी काशी जी में ८ दिन ठहरूंगा जो
 तुमहें पानी भेजनी हो तो रामजी मल्ल की
 कोठी नदें थोक के पते से भेजना ला१ ८ दिन
 के पीछे मैं कलकत्ते को जाऊंगा जो माल
 मैं ला१ था उसमें तिहाई विकचुका है—
 लो१ लखछा नफरल्ल हुआ है लो१ जो
 वचा है चाहिये कि कल तक वह भी विकणावे
 जो महाजन लपने रुपों का तकाणा करता
 हो तो तुम ५०० १०० वाला नोट किसी के पास
 गिरीं १ पत्र देना लो१ उसको बेवाक का
 देना नहीं तो पंद्रह बीस दिन में मैं ला१
 पत्र भेजूंगा तुम लपने पढ़ने लिखने
 लो१ सीने गूहने त्रोगी १ हमें गाफिल न रहना
 सिद्धा लो१ गुन बड़ी थी है थोड़ा बहुत

हिसाब भी सीख लो तो मेरी बड़ी खुशी हो -
मि० वैशाख बड़ी ई संवत् १८२६ तथा अश्विनी
सन् १८६६ ई०

४ पतञ्जलि की वेदी के नाम

सबमणि श्री नतनी पतञ्जलि को शिव
दीन का आशीर्वाद पहुंचे बहुत दिनों में
तुम्हारी चिट्ठी नहीं आई कल एक जन की
जवानी सुना कि तुम बीमार हो इस बात को
सुनने से मुझे बड़ी उदासी हुई अब तुम को
चाहिए कि जल्द अपने जीव का सब हाल
लिख भेजो मालूम नहीं कि किस की दवाई
करती हो अच्छा आह प्रिय की दवाई हो
पतञ्जलि बहुत पतञ्जलि से रहना पड़े
भीड़े का चारा करना जहां तक हो सके मूख
से मित्रि कमी न प्याता जो तुम्हारे वेदी की
सलाह हो तो जगह बदल डालो इससे भी
बड़ा फायदा होता है इन दोई का पानी बहुत
अच्छा नीबोग है जो वहां तुम्हारी भी सी
भी रहती है जो सब की मनी लेवो तुम वहां
चली जाओ लो १ जवत के तुम्हारा जो

लखछा नहोणावे तव तक चौथे दिन एक
चिट्ठी भेजती है। लागे शु० मि० लाशाद
वही २ संवत् १८२७ तथा जून मन् १८७० ई०

५ पात मालिक की लो० से नौका को

सत्रसगि शरी नाम दीन कहा० को मालूम
हो कि इस महीने की २४ तारीख की तीसरे
पहर तक हम सब लौट लावेंगे तुम दी दिन
पहले सब मकान ह० वहा० १ प्यना कोठरी
की कुंजी लाला ठाकुर प्रसाद लदा लावे
नाणिक के पास में न० १ प्यना दी है तुम उन के
पास जाकर ५८ चिट्ठी दिखाकर ले लेना।
लो० कोठरी से सब लसवाव निकालकर
जो जहा० का हो वहां देना कि जिस में
मकान सगि सा लो० हम खुसाफिर से न
समझ पड़े नामदास वगैरहम को एक दिन
पहले कहला देना कि सब के लिए प्याने को
वना १ कप्ये सब भीत० वाह० के पू० लाहमी
होंगे लिफाफा के भीत० एक चिट्ठी बिगाहरी
के न० १ ता की है वह ललिता नाई को दे देना।
लो० समझ देना कि २६ तारीख का न० १ ता

सब जगह कह ल्यावे लो० सेव मे हाथ जोड़
 ल्यावे कि ज० ११ २ ल्यावे पढ़्यते ही दो तीन
 सप्तानिर्गं विद्या होगी इसलिदै १२ कहानों
 का बंदोबस्त क० ११ प्यना घोड़ों के त्रामनेषाम
 लो० हाथिर्गों के त्रामते था० ११ त्रोगे०: सब
 चटो० १ प्यना कि उस प्रकृत दिक्रकृत न हो-
 लिप्यी नाम सहार्गि मिः शत्रुत्रन शुद्धि २ संवत्
 १६२७ तथा पुलाईसन १८७० ई०

थोथा कांड

छोटों लो० वडों के सत्राल लो० जावावा
 सत्राल १५११ वेदा की लो० सेवाप को

सिधये शरीर (ई) म० नोपनि विनाजमान
 गिता जी को नाम दीनत्का प० नाम पढ़्ये-
 ल्यावे वहुत दिनों से ल्याप की कोई चिटठी
 नहीं ल्याई यलने के वक्त ल्यापने कहा था
 कि ललठ गाने २ पीछे गुरु चिटठी लिप्या करुंगा
 प० न जाना कि किस कागज से ललभी गक
 कोई चिटठी नहीं ल्याई याहता हूं कि कोई
 युक्त मेरी लो० से हूई हो तो उसे माफ कीर्णिया
 ल्याप के कहने से मैं ने बेशाय्य शुद्धि २ संवत्

संस्कृति पढ़ने का लगाना लगाया है लक्ष्मी
 हितोपदेश पढ़ता हूँ मुझ को मनोसा है कि जो
 इसी तरह साल भर पढ़ता रहता तो नागरी
 बहुत दुरुस्त हो जायगी लक्ष्मी ने मन
 मन से मेहनत काता हूँ लक्ष्मी जो कुछ उस
 का फल हो वही मुझ्वात है - पिताः
 लक्ष्मी पतञ्जलि -

३० पतञ्जलि की लक्ष्मी से वद को

सुत्र सति शरीर चित्तं वि लाला गमयितुं
 को शिव दीन का लक्ष्मी वाद पढ़ये लक्ष्मी
 मैं ईश्वर की दया से लक्ष्मी गत हूँ गुमहारी
 लक्ष्मी मलाई गत नि दिन परमेश्वर से
 आता हूँ गुमहारी चिट्ठी पढ़ती वडी प्रुशी
 हुई गुमने जो मेने चिट्ठी न पढ़ने का
 गिलला लिप्य था सो ठीक है सत्य है जैसा
 गुमलिप्यते हो मैंने वाद्य किता था कि लक्ष्मी
 दश में दिन मेरी एक चिट्ठी पढ़ती रहती
 पर की लिप्य इन दिनों में हाकिमों के साथ
 वरावरी होने में रहना हुआ इस से पतञ्ज
 मेघने में डील हुई लक्ष्मी सवत रह लक्ष्मी

मलाई है कुछ धवड़ाने की बात नहीं हमारे
 कहने से तुमहारे संस्कृत पढ़ने का हाल
 जाना गी। तुमने बहुत लत चछा किया हितो-
 पदेश पढ़ने से बोली दुसरा होने के सिवा
 लो। बहुत से प्रसिद्ध हैं कि उसकी बातें बहुत
 कानों सिद्धासन की हैं जो उन को पाद किने
 रहे तो बड़ा मला मानुश बन जाय जो तुम
 मेहनत करते हो तो ईश्वर चाहेंगे तो प्राप्ति
 मेहनत का फल पा लोगे विन मेहनत विद्या
 नहीं मिल सकती लो। शुभमि० कार्तिक
 शुद्ध ५ संवत् १८२७ तथा सिंगर सन १८७७

सवाल २ पातल वेदे की लो। से मा को

सिद्धि शरी (६) माता जी को यान सेत्रक
 नामदीन का पनाम पढ़ें ये मैं लो। से विद्या
 होकर नौकरी के प्योण में काशी जी में
 पढ़ें। एक लठवाने के पीछे कनिशानदत्त
 व गी। दत्त महाणों की दुकान में २५११०
 माहवारी पन कारिंदगी के काम में नौकरी
 हुला लो। एक ही महीने की तनप्राप्ति
 मिली है उस में ७११० पनाम हो चुके हैं वकी

छ १०० थर के ब्रासो १ कप्ये है अगवान् था हं मे
 तो हो तीन महीने में २५११०० क की हुंडी
 मेणूंगा इस शहर में नेशमी कपड़े लय रहे
 लो १ ससो विकते है मेनमन है कि मगलव
 के मुवाफिक जो ल्पाप रुकुम है तो सोल
 लेका मेणवाह इसके सिवा में एक सिता
 पहां रु २ है वे नेशमी कपड़ों की दुकान का तो
 है वे मुह उया १ भी देवेंगे लो १ सोल में भी
 कभी करेंगे ल्पाप का रुकुम था हाहू प्रीति
 का लिप्यु ल्पागे शु० मि० माहो सुदी ३
 सव १२२२२ तथा ल्पासा मन् १८७० ई०

जवाव माता की लो १ से पुनको

मत्रमति शरी चिन्गी विपुता १ नाम दीन
 को मेन वहुता तनह से ल्पाशीन वाह पहुं ये
 वेटा तुमहानी चिट्टी वड़ी लो १ से १ में ल्पाई
 ल्पाप्ये प्युलगाई लो १ छाती गुड़ानी तुम
 जीते रंही तुमहानी मेकनी सुनका वहुता
 मन ल्पानंद रुक्मा लो १ जी व ठिकाने रुक्मा
 तुम ने जो लिप्या कि तीन था १ महीने में
 २५११० की हुंडी मेणूंगा सो मेने मै १ तुम जीते

नहीगे तो बहुतसी रुंडियां मेजोगी लोभ में
 प्यार कतूंगी तुमसे मुझे सबल्लासता है कि
 तुमहागी मुझीहै कि तुमको लपने धनकी
 इतनी शिस्त है मैं यह कभी काम समझती हूं
 कि एक तुम छूने तुमनोंकरी पग निकले लोभ लोभ
 था यैसे कसा लोभ मेरी लोभ से तुम बेफिती
 नही मैं यहां लपने देश में हूं जो कुछ प्यार
 का काम लगेगा सो सब तदवीन कर लूंगी तुम
 यहां पन देश में किसी तरह की दिक्रता न
 उठाना हो यैसे लपने पास बनाये न प्यना
 कपड़े के वाता जो तुम ने लिखा था सो मैने
 मेने उसका हाल यह है कि जो पशुता पूछो
 तो किस चीज का काम नहीं है पन हाथ में भी
 तो कुछ होना चाहिये कोई संत नहीं देखेगा जो
 कपड़े वाला तुमहागा वीहारी है लोभ तुम
 उससे प्रार्थना की ल्लाशा न प्यते हो तो तुम
 भी तो उसके भित्त हो लोभ उसे भी तो तुम
 से लपने नफल की ल्लास है जो उथा
 देखेगा तो लपना नफल न प्यकर देखेगा
 यह तुमहागी मूल है कि यह तुम को ससता
 देखेगा लप्य छा लप भी नहजालो फिर लपोगी

द्वयलिङ्गा जात्रेगा ल्नागे ल्नाशिशके सिवर्गि
 कर्णा लिप्यं शुभ मि० कुल्लानवटी ३ संवत्
 १८२७ तथा सितंवसन् १८७० ई०

सत्राल ३ पीते की ल्नागे से दौदे को

सिद्धि शरी (५) सत्रोपनि विनाजमान
 दद्या जीव को तामदत्त का पनाम पङ्कथै—
 ल्नागे १४ गानीप का लिप्या कुल्लान पतन कल
 तीसेने पहन डाक पन मेने पास पङ्कथा लिप्या
 कुल्लान हाल जाना ल्नापने जो छोटी वहिन
 के विवाह की वावग लिप्या है कि उसके देन
 से भी जलद छुटटी पाना बहुत जरूरी है ल्नागे
 यह कि ल्नाप का त्रिचा १ है कि कहीं से उद्या १
 लेकर फरागुन ही तक उसे किसी न किसी गनह
 ल्नापनी ल्नागे पुत्रियों की ल्नावतू के लार्पिक
 ल्नापने ठिकाने लगा दूं सच २ तो यह है कि
 जो ल्नाप के त्रिचा १ में होगा वही ठीक है ल्नागे
 में उस में कुछ कहने के लार्पिक नहीं पन ल्नाप
 ल्नाकेले उसका हाल ही नहीं लिप्यते मुह से
 सल्लाह भी पूछते हैं इस वासते लिप्यता हूं
 मेरी थोड़ी समझ में ल्नामी उस की उमर कम

हे लम्बी पांथ ही व१श की होवेगी उसका
 विवाह क१ना इतनी जलदी बहुत बेसलाह
 हे लम्बी बहुत से संदेह लो१ ड१हैं क१।
 फरिदा जो लपने ऊप१ लपनाय लीजिपै
 इस के सिवापि लम्बी इतना सुवीता नहीं कि
 लो१ काम नकि१। १ही सही फिर क१जलेक१
 सैकड़ों रुप१ व१ज में देक१ ऐसे बेज१नी काम
 कीजिपै गो कोई लचर्य वात नहोगी लम्बी
 पांथ छः रु११ रुप१ लेक१ डाकु१ों की ग१ह
 ध१ पूं१ तमाशा देया ग१। गो पीछे को इमका
 फल क१ होगा लो१ कहां से लावेगा लो१ किम
 ग१ह से बचाव होगा लो१ जो हुकुम होगा
 उसमें उ११ नहोगा लो१ शुभ मि० योशवदी
 ५ संवत् १८२६ तथा दिसं१ सन् १८६६ ई०

जलाव दादा की लो१ से पोते को

सब सति शरी चि१जीवि नाम दत्त को
 शिव दत्त का लाशी१ वा१ प१ं१ ये गुम१ानी
 चि१दी लाई गुम१ानी बु१विमानी से ब१।
 लानंद लो१ भ१ोसा हु१ला मु१े गुम१ानी
 सलाह विना ग१ती भ१ काम क१ना नहीं है

ईश्वर ने तुमको सव तगह की बुद्धि दी है
 लो१ तुमहारी ह१ एक बात बड़ी बुद्धि लो१
 समझ की होती है तुमहारे पात्र के लाने प१
 मैं ने भी जो विचार किया तो तुमहारी सलाह
 बहुत लच्छी पाई सचमच पांच छः व११
 की लड़की का विवाह करना वे मालव है लो१
 सव तगह से इसमें डर है इसके सिवाय य१
 शासत की पोथी में भी दश व११ तक का
 ब्याव है किसी तगह की कोई जलछी नहीं
 तव तक जो प१ भेश्वर की दी हो जावे लो१
 तुम किसी जंची नौकरी प१ हो जा लो लो१
 उसकी मार्ग से लच्छी तगह उस के विवाह
 करने की सामर्थ्य हो जावे इस वक्त का
 लेकर विवाह करना लपने ऊप१ एक लपना
 मोल लेना है लव में ऐसी बातों का मन कभी
 न कूंगा शुभमि० माघ व१ २ संवत् १८२६
 तथा जनवरी सन् १८७० ई०

स० ४ पात्र मान्यो की लो१ से माया को

सिद्धि शरीर म१ वोपमा पात्र मा भी जा
 ११ (१) देव वेग को लसग१ लली का

सलाम पढ़ेंचै ल्हागे एक महीने से माताजीको
 पावन ल्हागै है पहले पहल ठंडाई वंगोनःपिलाई
 गर्द पनचस से कुछ वीक्षण नहु ल्हा लवडाकटा
 साहव के वगलाने से लंगनेणी कुनैन संवेने
 व संवेणी को दी जाती है ईश्वर की कनिपासे
 किसी तरह का फलक जान पड़ता है मगो सा है
 कि जलद ल्हायछी तरह ल्हागाम होजावे-
 ल्हाय सुचिताग नहं माणी ल्हाय को बहुत गिह
 किगि कगती है ल्हाय के पास कोई सत्रागी भेजने
 को मुह से ल्हाण कहा है सो मैं चचा साहवका
 धोड़ा प्युध वप्यश सार्दस के साथ भेजकायाहता
 हूं कि जगून ल्हाइदिगा ल्हागे छोटे माई नसीपुध
 दीन को भी जगून साथ लाइदिगा जिसमें ल्हाय
 के दशन ल्हागे उनकी भेंट दीनों हों ल्हागे
 शुभ मि० वैशाख शुदी १२ संवा १८२७ तथा
 ल्हायनेल सन १८७० ई०

जवाव पतन मामा की ल्हागे से मान्णे को

सुप्रसति शरी चिनंजीवि सैपद ल्हासगा
 ल्हाली को हसनवेग की ल्हाशीस पढ़ेंचै -
 ल्हागे पुमहागी थिदडी ल्हाई पुमहागी भाका

हाल सुन का जी को वड़ी वीकुली हुई हम
 को वड़ा आशय है कि न तुम ने लो न
 तुमहने पिताने बीमागी का हाल लाज तक
 मुह को लिप्या लो न लव लिप्यो हो कि एक
 महीने से बीमा है बाहर लोगो आपकी समस्त
 मला वड़ी बात हुई कि लव पहले से कुछ
 लाना म जान पड़ता है भगवान् बाँहों तो जल
 नोग दू होगा पह दूरा इस बीमागी के लिए वहुत
 लय थी है तुम ने जो मेने लाने के मये लिप्या
 था सो मैने मेने तुमहने लिप्यने का कुछ
 काम न था मै आप ही तुमहारी बिट्टी के
 पहुँचते ही वहां लाता परंतु की कहुं सुनने
 में लाता है कि साहव डिपुटी कमिशनर
 वहा दू कल नमक की कोठी देखने लावेंगे
 लो न कुछ आशय है नहीं कि हमेशः
 की तरह लसपताल में भी ला जावें इस
 वासते कल तक लाने में लाया हूं परंतु पत्रों
 लपने वहां मुह जात देखना लो न मैने
 न सीपुद्धीन को छोड़े पर चढ़ा का पठाता हूं
 इसी गे हाजिरी से तो मदन से में उसका चढ़ा
 हाज होमा लो न लड़के लागे हो जावेंगे

कि कहीं मुहानिनी ब्रौनः की नौकरी करें
 कि किसी को होसिला नहीं होता कि कोई
 काम पड़ा करें या कुछ साल लेकर उस को
 नफ़्त की जागह देखें या अपने काम को अपने
 बुद्धि लोभ जानों मोई से बसकारें लोभ
 हज़ारों तहसीरों जीविका की हैं उनमें से किसी
 को लगभग नहीं जिसको देखो नौकरी दंडा
 है लगभग लोगों को देखो कि लखे रघु
 के बड़े यनी हों पंगु जिस काम में काम
 देखो उस को करेंगे इन दिनों ऐसा संगीत है
 कि मेरी कचहरी में भी कोई जागह पाली नहीं
 है कि उस पर उन्हें बुलाऊं एक मेरे मेहनतान
 साहव गोंड के गिले में मुहानिनी बंधे वसत
 हुए हैं जो आप कहें तो मैं उन के पास उसके
 बसत लगानी मेणु लाशचर्य नहीं कि
 वे साहव दंडा का के उसके नौकरी की कोई
 गह निकाल दें जैसा आप लियेंगे वैसे
 किया जावेगा आगे शुभ मि० कार्तिक वधी
 १४ संवत् १८२७ तथा लखद्वीप संवत्
 १८७० ई०

जवाब यथाकीज्जोनसे सतीजेको

सद्यसति शरी चिदंजीवि शरी धात को
 नाम पदसाह का लाशीन वाह पहुंचे तुमहागी
 पानी लाई ईश्वर तुमहागी दिन २ पड़गी
 कने ज्जोन जीता न कयें सच मुख इसतानह का
 ब्रकोत लागि है कि जहां देखो नौकरी का
 नौका है ज्जोन मैं ने तुम को ऐसे ही में लिखा
 कि जव उस के लिपि दूंदगे २ बनारि धक गि।
 ज्जोन कोई सुगत न निकली पड़ोसी का बड़ा
 हक होता है हम से न कहे तो किस से जाकर
 कहे गोंडे जाने में उसको किसी तनह काहीला
 न होमा लाय बहुत जल्द उन साहब को
 लिखें जव ते बुलावेंगे उसी हम जावेंगा धड़ी
 मन की देन न होगी तुम जव उसका ब्रह्माल
 न जानो जो दश वरश पहले था वल्कि उसे
 पहले इतनी जगूनत न थी माता पिता का पन
 संत हाथ लागि था ज्जोन पही सब बड़ना
 कि तुम ने दो तीन बार इस में सिफा निश की
 पन उसकी बेपन वाही से कोई काम देखने में
 न लागि तो भला जव भी कुछ हनन नहीं

उस का यह बुढ़ा पा तुम्हारे ही सब व से जीने
इश्वर तुम को जीता नकल्ये आगे शुभ मि०
कान्तिक शुद्धि ८ संवत् २८२७ तथा नकल्ये
संवत् २८७० ई०

स० ई० पतंगहिमेशिनी की जीने से वेद को
सिद्धि शरी सवोपमा योगिहकीस साहव
शरी ५ गंगादीन को शिवनाम की बंधनी -
जीने सीता नाम पंडु चै आगे लाया नकल्ये
गंगा नकल्ये कान्त हं कि दो महीने से मेने
पेद में कुछ विकास रहता है जो आता हं नहीं
पचता पहले से कुछ पचता काम भी कान्दी
है पचता भी नहीं पचता इसके सिवा कभी
कभी भूँड भी पिताता है पहिले भी पिताता था
पच हकीस मुहम्मद सैफे प्या साहव की दवाई
से आता हो गया था फिर नकल्ये बीस दिन से
बीमा हं मेरी नौकरी का हाल नकल्ये
तार जानते हैं कि जिस तार की है इसमें एक
दिन सुनीते से एक जगह मुकाम नहीं रहता
आगे हिं जीने कल वहां उस पच सिद्धि
घोड़े के जीने किसी सवारी में निवाह भी
नहीं फिर इस पच नामों की तकली में जीने

पाने पीने में भी धून कुधून हो जाती है वात
 पहि है कि हमेशः योगी बना रहता हूं जब तक
 व्याप में ही जानी करके कोई दवा न्यायकर्तृसे
 न देखेंगे तब तक योग की बीमारी से छुट्टी न
 पाऊंगा इससे चाहता हूं कि व्याप बड़ी ही
 करके जैसा कहें वैसा करूं व्यापका बड़ा पैरा
 होगा सि० योगी शु० २२ संवत् २८२७ तथा
 भाग्य सन् २८७० ई०

जिज्ञासु वैद्य की ओर से योगी को

सिद्धिगोत्रींशीमावशरीरशिशिराम को
 योगादीन की जगि सीता नाम पढ़ेंगे व्याप की
 चिह्नी लान्न न पयने के वाचन लार्ई मला
 बड़ी बात है कि व्यापनी गुरुगुरु तो मेरी सुनि
 लार्ई थाहे व्याप सुनि करें पा न करें ईश्वर
 व्याप को जलही व्यापाम को बिना नाड़ी देवे
 व्यापकी दवाई हैं कभी नहीं कासकता बीमारी
 बहुत दिन की हो गई है लो० एका० एकी सिमा
 देवे माले दवा लिप्य देना सलाह नहीं है
 व्याप के पांचवे दिन मेरा मुकदमः कयही
 में पेश होने वाला है इस सबब से मेरा त्रहं

लाना पुर होया जो ल्नाप धन पन रहे लोम
 थोड़ी सी मेहनत करके हकीमशास्त्र वपुश
 साहब के सकान पन ल्नापावे गो वहुत नयही
 तनह बीसानी थुल जावेगी लोम ल्नाप के
 सामने हवा लिप्यहुं ल्नाप धवनाइने नही
 दूश्वन चाहेंगे गो बीसानी का नाम न रहेगा
 पन थोड़े दिनों के लिपि पागो ल्नापको छुट्टी
 लेनी होगी वा कोई ल्नापास कीसानीपालकी
 नयनी होगी मि० के० व० ई० संवत् १८२७
 तथा माह लपनेल सन् १८७० ई०

स०७ पानहिमेशिनी की लोमसे पुर को

सिद्धि श्री सन्धोपनि द्रिगण मान
 शरीरहे पुर जी साहब को सदा नीलाल की
 हंसवत पहुंचे ल्नाप जागते होंगे कि वहुत
 दिनों से मेरा इनादा था कि दुखी मनीशों के
 लिपि शहर में एक ल्नासपताल बनवाऊं
 पन हन एक काम ल्नापने द्रुत पन होना है
 इस जामने कोई सनत ल्नावतक देखन पड़ी
 ल्नाप ईश्वर की मनीसे जान पड़ता है कि
 इसका द्रुत ल्नागति सो मेरे मन में है कि

५१ सों सवेने छः वणें मेरे प्योही जावेगी उस
 वक्तों ल्याप के होने से वड़ी वनकन है गल्ल
 जुव की कि कोई ल्य अच्छी बात निकल जावे
 इसी से ल्याप मेहनतानी करके २ धड़ी के बसो
 तक लीफ उठाकर पावून ल्याइयेगा पुनर्प का
 काम है ल्यागे शु० मि० माध शुही २ संवत् २७
 तथा माह जानवरी सन् १८७१ ई०

जवाब गुरु की ल्यो न से खेले को

सतसति श्री चिन्मयि सि मद्य गी लाल को
 नाम परसाह की ल्यशीस पड़ुये पुमहावी
 चिटठी मेने बुलाने के लिए ल्याई पुमहावी
 ल्य अच्छी नीति ज्ञा पुनर्प का दुगहा देण कर
 वडा ल्यानह कुल्ला ईश्वर पुम को इस से
 ज्ञाहः सामर्थ्य दे दीक २ इस से सिद्धि
 कोई नाम निशान नहीं ल्यो न कोई इस से
 ल्य अच्छ काम है परमेश्वर चाहेंगे तो ५१ सों
 सवेने पावून २ प्युशी से ल्यायेगा जो ल्याना
 न कुल्ला तो इन थोड़ी सोरी २ वगैरों कायेगान
 पावून न प्युयेगा जहां मकान वने वरु जगह
 नीची न हो उसके आगे तनकर प्युला हो उस

के नवाहीक कोई नाला पायेत ज्योतः रेसा
 नहो कि जिसमे हुनमांवि ल्याये हुसने पाहां.
 तक होसके मकान उताग मुख्य हो किसीके
 कहने पर नमाना इसमें सवहिनोंमें ल्याना
 होमा ल्योन कुसली प्रदूत हो दीवर्गि कंयीहों
 ल्योन चानों गनप्र थिड़कितां नय्य वाना
 गसोई का धन ज्योतः दू हो संयत तिथिवान
 ल्यादि का पदधन भी नय्यना तुम गो ल्यापही
 बुद्धिमान हो ल्योन ये सव चानों तुम ने पहले
 होसे शोअ लीं होमी पर सुचि रहनेके लिये
 लिखी गइहें शरीर तुमहारे काम ल्याये शुभ
 मि० मास शु० २ संवत् १८२० तथा माह
 जनवरी सन् १८७० ई०

पांचवां कांड

वना वन बालोंके नाम

२५११ आई की ल्योनसे आई को

सुत्रसति श्री (अ) आई गम नागार्जुन को

शंकर दत्त का नमस्कार पहंचे आई माहव
 ल्योनी गनहिं वनशा नहीं हुई है इसमें सव

लोग धनवागोहें ईश्वर लपनी कनिपाको
 नहीं तो हथानों लादमी लो१ गो१ म१ जावो
 जाना नहीं कि उबन की हाल है जो ऐसी
 दिक्रकदागी नहो तो थोपापों के लिपे कुछ
 आगे लो१ ध१ के वासते थोड़े गेहूं लो१
 चने भेषवा दीजिपे १हां वडी तंगी है मूखानाम
 को नहीं मिला जमीन प१ किसी त१ हकीयस
 नहीं जमानी आप जितने गेहूं म१ वा ग१ धे
 वे सव थुक ग१ ल१ व बोले ही म१ के १ह ग१ हैं
 जो उसमें हाथ लगाया जा१ गा तो की बोत्रेंगे
 लो१ थोड़े के दाने के लिपे तो ल१ थिक दिक्रक
 है कीकि पांय थः से१ दाना उस कोने ज१ की
 ब्रह्मकहों से लावे जो ब्रह्म दो से१ भी पावे तो
 वडी वात है जो गुम हैं इस के वेचने में कुछ
 उपा१ नहो तो ला१ कलह दो एक गाहकों
 उन के हाथ वेच डाला जावे मि० ला१ शा०
 वदी ५ संवत् १८३६ गथा जून सन् १८६६ ई०

२ पा१ भाई की लो१ से वडी वहिन को

म१ स१ श१ की वडी वहिन को क१ म१ मु१
 दीन का १ था उचित प१ है ला१ ज१ से गु१

उस लो० गर्द हो तुमहारे नाम हो चिरछिपां
 मेणी गर्द जत्रावल्लभी तक नहीं लाया जान
 नहीं पड़ता कि क्या सबव है हाल साल लिखने
 की जगह पह है कि तुमहारे करने से मैदा
 सैफेद जान के विवाह के लिये इसामी नाई के
 मा० फरा कई जगह वा कही की गर्द उसमें
 हो जगह पर गनना वन गर्द है एकतो मुगहा
 वाद के गर्द स मुहममद जमाया के पहां लो०
 इसी शाहावाद के गर्द स मोलवी मुवा० कहुमेन
 प्या के पहां दोनों जगह की जाति विवाही का
 हाल तुम लख्खी तरह जानती हो लो० दोनों
 लड़कियां बहुत थपु० लो० दुमा० में रई वरस
 की हैं इस मुकदमे में जाति पंक्ति के लो० से
 लो० पु० नि० से भी पूछा गी उन सब लोगों
 की म०णी होती है कि मुगहावाद में लख्खी
 है परंतु लव तुमहारी जैसी म०णी हो तैसा
 लिप्य मेणी लो० ५०७ १० की कुंडी मेण
 दीजिये कि जिस से १७७५ के महीने में खेद
 की नीति का दी जात्रे १०७७ माह जमादि स-
 सानी तथा लकद्व० सन् १८७० ई०

३ अतः मित्र के नाम

सुवर्ण शरी (३) मित्र शेष्य इमामवप्रश
 साहव को कनी मुद्दीन का सलाम पहुंचे-
 लामे लाम की पुत्री की पत्नी लसी मेने
 पास पहुंची लिखत पर जो लगे ही वहुत लानंद
 हुआ ईश्वर ऐसी पुत्री सब को देवे परमात्मा
 को यह लड़का लाम को बहुत फल लो न
 उसकी उमर बढ़े लो न लाम की सेवा को
 लो न लाम की हँसी उस पर सदावनी रहे इस
 में संदेह नहीं है कि वह तुम्हारे लिये धन
 का दीया पैदा हुआ इससे जितनी कुछ वड़ाई
 ईश्वर की करे लो न उसका इहसान मानें
 वह सब थोड़ा है लो न लपनी पुत्री का कुछ
 हाल नहीं कह सकता सच बात तो यह है कि
 जो लोग कहा करते हैं कि पुत्री के माने लामे
 में नहीं समाते सो वही मेरा हाल है लो न में
 जब तक उसे लपनी लो नों से नहीं देखता
 तब तक मुझे कभी कल न पड़ेगी इससे मैं
 परमों पसून वहां ही होऊंगा लो न पुत्रु
 मैंने इहसान लली की माता हाथ की खुंवाई

के भेजती हैं निश्चय है कि मेरे साथ वे भी उस
दिन आएंगी क्योंकि उन्हें यह पता नहीं नहीं
होती कि सच मुच यह प्युशी हमारे भागी की
है मि० मा० १५६ वही १४ संवत् १८२७ तथा
लगभग सन् १८७० ई०

४ पातलिपेशिनी के नाम

सर्वसत्ति शरीरधरम सागर सेठ जी को
गामध्याल का आशीर्वाद पहुंचे सुना मनी
कि आप जगन्नाथ जी जाने का विचार करते
हैं देखा चाहिये कि आप के जाने के पीछे कोठी
के गुमाशते हमारे देने लेने का क्या होगा कि से
यत्नावेगे अवगत हमेशः जब सनका १ से
क्रिस्ता लगती थी तो आप के यहां से लेकर
सनकारी प्यजाने में रुपया दायित्व किया जाता
था जो फिर पीछे से गांव की नामधनी का
रुपया आप की कोठी में जमा होता रहता है वह
अब उसी नीति पर आप अपने कारिंदों से
कुकुम दे दीजिये कि आप के पीछे रुपयों के
देने में किसी तरह की नाहीं जोर हील न
करें आपी वदत की लिखूं मि० पदेशठ

कनिशन ५ संवत् १८२८ तथा मईसन् १८७१
ई०

पुपतंगमिता के नाम

सत्तममिश्री (३) मिता मुणक्क १५५।
को लव दुलकीम का सत्ताम पङ्कथै -
ल्लाप का नपिता लवदुलहका लो १ लल्लु-
लल्लाह के विवाह में मेने शामिल होने के
संयत् पङ्कथै उस से बड़ी ही प्युशी हुई सथ
है १६ प्युशी का दिन ईश्वर ने बहुत मनाते
मनाते दिव्यानि है मैं तो शिरी के वल पङ्कथै
पन की कइ कि एक महाजन ने मेने अपन
दीवानी में २००० १० की नालिश की है जो
जो तानीप ६०० मैपानों के विवाह की है
उसी दिन उस मुकद्दमे की येशी है इस
सब से लाया हूँ जो होसकेगा तो गिनाते
पड़ते जून विवाह के वक्त गाति को ब्रह्म
पङ्कथै लो १ ल्लाप से भी इस मुकद्दमे
में सत्ताह की जून है क्योंकि इस मुकद्दमे
को ल्लाप लच्छी तनह से जानते हैं कि ई
वर्ष में ५०० १० से २००० हो गये हैं मैं ने

लब्ध थी तब ह सुना है कि वही प्याता लोभ
 तोपनामचा जाली वचापि गरी है इस
 मुकदमे में भी व्राजिद लली साहव को
 वकील कनहि है इस विचार से कि ल्याप से
 लोभ उन से एक ही वासा है इससे ल्याप मेहनतानी
 कन के वाहव की जाकन भी साहव को
 इस मुकदमे का लसल हाल लब्ध थी
 तब ह समझ दीजिये लोभ उन का मेहनतानी
 लोभ शुकाना लभी ठीक नहीं कुल्ला
 ल्याप को जेसा समझ पडे वात थी कन के
 वैसा ठीक कन लीजिये मि० योश सुदी २२
 संवत् १८२८ तथा दिसंबर सन् १८७१ ई०

ह पद्म मिता के नाम

सवमति श्री दया सागर पशुचिमी
 सह ललहाला के वकील पंडित जीनार्ति
 साहव को नाम नार्ति का नमस्कार पुंछे
 ललागे हमारे शत्रु सुन माहताव सिंह ने
 शरीर छोड़ दिया लोभ उन के आई वंधु
 लोभ में गार्ति के वासे ल्याप समेत गडा
 है लोभ हाल साल इलाका सरकार की

लोह से धाम गहरील है इसलिये ल्हाप को
 लिखता हूं कि ल्हाप दो दिन के लिये हिं
 ल्हाप की मुकद्दिस का हाल जान का मुद्दे
 बतावे कि किस बुनियाद पर यह मुकद्दिसः
 किया जावे गणा साहब ने हिवानामा ज्ञा
 दान पर भी ल्हापने जाती मैरी नवनिहाल
 सिंह के नाम लिख दिया था ल्हाव मुकद्दिसः
 दान पर बुनियाद पर कों ज्ञा ल्हापने ज्ञासा पर
 जोसी ल्हाप की सलाह होगी वैसा किया
 जावेगा शुभ

उपायमित्र के नाम

सद्गति श्री शुभोपमा योगि श्री (३)
 दीवान जी को शिवदत्त का ल्हाशीन वाद
 पहुंचे ल्हाप ल्हाप को लिखता हूं कि मायत्र
 परसाह का इलाका बहुत सी डिगियां होने
 के समय से इन दिनों नीलामकुल है ल्हाप
 या गोंदहमने भी लिखे हैं पर उन में से दो
 गांवों की जमीन वेथानी है जो वरशा ल्हाप
 हुई तो धनीपर ल्हाप पैदा होती है पर गुब्बि
 कुलों के वील का होना कठिन है इस

वक्रा में सब लोगों की यह सलाह पड़ती है
 कि दोनों निपनिपां गांवों में पांच २ सात २
 कुएं पक्के बन बाँधिए जावें इसलिसे न्नाप
 को लिखता हूं कि न्नाप बनवाने के काम में
 बहुत चतुर हैं न्नाप ने बहुतों ने मकान न्नों
 कुएं बनवाए हैं न्नव न्नाप मुझे सलाह दें
 कि न्नप ने न्नाप बनवाना न्नच्छा होगा
 कि देके में मेहनतानी करके इसको जवाब
 जगूत दीजिएगा शुभ मि० चैतन शुद्ध ५
 सं० १८२८ त ० सन १८७१ ई०

पतनमित्रके नाम

सुप्रसन्न शरी मितन शरी (३) शिवलाल
 तनिवेदीको गमाथीन मिशन का नमस्कार
 पंडुचै वडी बात हुई कि बहुत दिनों में न्नाप
 की चिट्ठी पंडुचै न्नों जी को बड़ा न्नानंद
 दिया ऐसी खुशी हुई कि उस को कह नहीं
 सकता जो मिलला गुजारी की बातें न्नाप ने
 मुझे पत्र लिखीं सो यह ब्रह्म कहावत है कि
 उलटे चो न कोतवालै डांडै मेरी दो तीन
 चिट्ठियों का जवाब न्नाप ने न लिखा न्नों

जब यह आई कानो हो लो १ उलटे मिल ला
 सुनाते हो लो १ पातनों के न पड़ने का बहाना
 लेते हो मिलने के प्रकाश में आप से समझता
 पन जब आपकी लो १ से लगाया लगा है
 तो सारी निम जाती रही लो १ मन साफ हो
 गति लो १ मुझे मनो सा है कि आप इसी तरह
 सदा अत पातन भेजते रहिये कौनकि पातनी से
 लो १ मुलाकात होती है लो १ मैं नागो १
 में ५७ १० माह्वारी पन सव डिपुटी इन संपेकदन
 के काम पन नौकर हूँ जगिधः शुभ भिन्कारितिक
 वही १ संवत् १८२७ त ० माह लकटू वन सन
 १८७० ई०

ठ पातन दोस्त के नाम

सब सति शरी भित्नी जी शरी (३) रुकी मुद्द
 दीन माह्व को गुलाम लो १ म का सलाम पड़्यो
 लो १ आपका पातन पड़्यो लो १ जो जल से
 तह जीव की का १ आई का हाल पूछा सो
 भित्नी मेने लो १ कल १ हों लो १ तों के पढ़ने
 के मधे १ वडे २ सवाल जावाव होते हैं वडे २
 पंडित लोग लो १ पनी २ सति जाहि १ काने हैं

वे लोग यह कहते हैं कि सत्तरी लोचन पुरुषों में
 ईश्वरों के जन हैं लोचन ईश्वरों की बहुत
 अच्छी वस्तुओं में इन दोनों का वनवन
 हिमसा है लोचन विद्या जिसमें समस्त होता है
 उससे सत्तरीयों की ललगा नकली जैसे यह
 सिर्फ मादों की हृदय भी लोचन सत्तरीयों
 की विलकुल नुकसान करने की बात है
 सत्तरीयों के पढ़ाने के लक्षण गिनती फल कहते
 हैं सबसे बड़ा फल यह है कि वे इससे पूर्ण
 मलमंसी सीप्य जंगी लोचन जिस मलमल से
 पञ्चात्मा ने सत्तरीयों को बनाया है वह मलमल
 पूरा होगा सब रीति से पुरुष की दुःख सुख की
 साथी लोचन बहद्गात्र होगी इन सत्तरीयों की
 संगति भी अच्छी होगी क्योंकि मावाप की
 संगति के पञ्चात्मा से कोई प्राप्तिः लसत वालों
 पञ्च नहीं होता तिस पीछे गतिरुसथी लोचन
 दुर्निपाद्यरी के कामों में पककी होगी लोचन धन
 की बंदो वस्तुतियों से जो बहुत सी विपत्तिलोगों
 पञ्च पड़ती हैं उनसे लपने धन को बचावेंगी
 ऐसे ही यह कोई नहीं कहता है कि सत्तरीयों का
 पढ़ाना पञ्चम से बाहर है पञ्चपुत्रों का था

दृष्ट्य को संदेह का तो है न्याय का विचार इसमें
कही है मि० वैशाख शुद्ध ८ संवत् २६२७ तथा
सन १८७० ई०

१० पानि प्यां के नाम

सर्वसति श्री मित्र श्री (३) रुग्णालूयों
को सुलह वा प्यां का सलाह पढ़ें ये लोगों की
प्रवानी मालूम हुल्ला कि सांने लववे से तो
रुग्णालू वधेड़ा उठगी पानि तुमहां ११ हं लमी
वही नवावी का लंयेन है कोई महीना ऐसा
नहीं बीता कि जिस में दो एक फसाद नहीं
इस बीच में यह सुन पड़ा कि दशदिन पहिले
किसी रुग्ण में न्याय पानि ५०७ १० गुणमाना
भी हो गई इस के सुनने से लो० बहुत दुःख
हुल्ला लच्छा होगा कि जो तुम वश मी
लपना सवमात्र दुसरा को लो० हितोपदेश
की कितारें कमी २ देखा को लो० जवनिस
लगे एक धूँद पानी पीकर यह मन में विचार
लो कि इस जिस का लंत की होगा लो० जो
चुप रहोगे तो कितनी न्यायों लो० प्रतापि
से वचाव होगा ईश्वर ने जो मनुष्य को

पशु पक्षियों से बड़ा किया है तो सिनफ्रु समझ
ही का भेद है जो मनुष्य भी पशु पक्षियों की
तनह लड़ाई लोभ गुस्से में पड़ा रहे तो फिर
उसमें लोभ बाध बोगेन में बर्ता फलक है यह
पतन पड़कर तो ल्हाप नागाण होंगे परंतु जब
ल्हाप की निममित जापगी लोभ विचार
करेंगे तो भेना बड़ा गुन मानि पेंगा मिश्रतावन
शुद्धि ३ संवत् २६२८ तथा जौलाई सन् १८७०
ई०—

पुसाक समाप्त हुई—

होहा

नम वसु वसु शशिईसवी पथमजनवरीवास
पूरी पातर्हितेशिनी लछमन पुरी निवास १

इति

